

११. विराटरूपदर्शनयोग

अर्जुन बोले— आपने मुझपर कृपा करके जिस परम गोपनीय अध्यात्मतत्त्व को कहा, उससे मेरा भ्रम नष्ट हो गया है. (११.०१)

हे कमलनयन कृष्ण, मैंने आपसे प्राणियों की उत्पत्ति और प्रलय तथा आपके अविनाशी माहात्म्य को विस्तारपूर्वक सुना. (११.०२)

हे परमेश्वर, आप अपने को जैसा कहते हैं, वह ठीक है; परन्तु हे पुरुषोत्तम, मैं आपके ईश्वरीयरूप को अपनी आंखों से देखना चाहता हूँ. (११.०३)

हे प्रभो, यदि आप समझें कि मेरे द्वारा आपका विराटरूप देखा जाना संभव है; तो हे योगेश्वर, आप अपने दिव्य विराटरूप का दर्शन दें. (११.०४)

श्रीभगवान बोले— हे पार्थ, अब तुम मेरे अनेक तरह के और अनेक रंग तथा आकृति वाले सैकड़ों-हजारों दिव्यरूपों को देखो. (११.०५)

हे भारत, मुझ में आदित्यों, वसुओं, रुद्रों तथा अश्विनी कुमारों और मरुद्गणों को देखो तथा और भी बहुत-से पहले न देखे हुए आश्चर्यजनक रूपों को भी देखो. (११.०६)

हे अर्जुन, अब मेरे शरीर में एक ही जगह पर स्थित हुए चर और अचर सहित सारे जगत को तथा और जो कुछ देखना चाहते हो, उसे भी देख लो. (११.०७)

परन्तु तुम अपनी इन आंखों से मुझे नहीं देख सकते हो, इसलिए मेरी योगशक्ति को देखने के लिए मैं तुम्हें दिव्य दृष्टि प्रदान करता हूँ (११.०८)

संजय बोले— हे राजन्, महायोगेश्वर हरि ने ऐसा कहकर अर्जुन को अपने ऐश्वर्ययुक्त परम दिव्यरूप का दर्शन कराया. (११.०९)

अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण के अनेक मुख और नेत्रों वाले, अनेक अद्भुत दृश्य वाले, अनेक दिव्य आभूषणों से युक्त, बहुत सारे दिव्य शस्त्रों को हाथों में लिए हुए, दिव्य माला और वस्त्रों का धारण किये हुए, दिव्य गन्ध का लेपन किये हुए, समस्त प्रकार के आश्चर्यों से युक्त, अनन्त विराट्स्वरूप का दर्शन किया. (११.१०-११)

आकाश में हजारों सूर्यों का एक साथ उदय होने से उत्पन्न प्रकाश भी उस विश्वरूप परमात्मा के प्रकाश के जैसा शायद ही हो. (११.१२)

उस समय पाण्डुपुत्र अर्जुन ने देवों के देव श्रीकृष्ण भगवान के दिव्य शरीर में — अनेक प्रकार के विभागों में विभक्त परन्तु एक ही जगह एकत्रित — सम्पूर्ण जगत को देखा. (१३.१६, १८.२० भी देखें) (११.१३)

(भगवान के विराट्स्वरूप को देखकर) अर्जुन बहुत चकित हुए और आश्चर्य के कारण उनका शरीर पुलकित हो गया. अर्जुन ने हाथ जोड़कर विराटरूप देव को (श्रद्धा और भक्ति सहित) सिर झुकाकर प्रणाम करके कहा. (११.१४)

अर्जुन बोले— हे देव, मैं आपके शरीर में समस्त देवताओं को, प्राणियों के अनेक समुदायों को, कमल पर बैठे हुए ब्रह्माजी, महादेवजी, समस्त ऋषिगण और दिव्य सर्पों को देख रहा हूँ. (११.१५)

हे विश्वेश्वर, आपको मैं अनेक हाथों, पेटों, मुखों और नेत्रों से युक्त तथा सब ओर से अनन्त रूपों वाला देखता हूँ. हे विश्वरूप, मैं आपके न अन्त को देखता हूँ, न मध्य को और न आदि को ही. (११.१६)

मैं आपके मुकुट, गदा और चक्र धारण किये सब ओर से प्रकाशमान तेज के पुंज जैसा; प्रज्वलित अग्नि और सूर्य के समान

ज्योति वाले तथा नेत्रों द्वारा देखने में अत्यन्त कठिन और अपरिमित रूप को देख रहा हूँ. (११.१७)

आप ही जानने योग्य अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा हैं, आप ही इस विश्व के परम आश्रय हैं, आप ही सनातन धर्म के रक्षक हैं, आप ही अविनाशी सनातन पुरुष हैं, ऐसा मेरा मत है. (११.१८)

मैं आपको आदि, मध्य और अन्त से रहित तथा अनन्त प्रभावशाली और अनन्त भुजाओं वाले तथा चन्द्रमा और सूर्य की तरह नेत्रों वाले और प्रज्वलित अग्निरूपी मुखों वाले तथा अपने तेज से विश्व को तपाते हुए देख रहा हूँ. (११.१९)

हे महात्मन्, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का यह सम्पूर्ण आकाश तथा समस्त दिशाएं केवल आपसे ही व्याप्त हैं. आपके इस अलौकिक और भयंकर रूप को देखकर तीनों लोक भयभीत हो रहे हैं. (११.२०)

समस्त देवताओं के समूह आप में प्रवेश कर रहे हैं; और कई एक भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए आपके नाम और गुणों का कीर्तन कर रहे हैं. महर्षियों और सिद्धों के समुदाय "कल्याण हो, कल्याण हो" कहकर उत्तम स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति कर रहे हैं. (११.२१)

रुद्र आदित्य, वसु, साध्य, विश्वेदेव, अश्विनी कुमार, मरुत, पितृ, गन्धर्व, यक्ष, असुर और सिद्धगण — ये सब चकित होकर आपको देख रहे हैं. (११.२२)

हे महाबाहो, आपके बहुत मुखों तथा नेत्रों वाले, बहुत भुजाओं, जंघाओं तथा पैरों वाले, बहुत पेटों तथा बहुत-सी भयंकर दाढ़ों वाले महान् रूप को देखकर सब प्राणी व्याकुल हो रहे हैं तथा मैं भी व्याकुल हो रहा हूँ. (११.२३)

हे विष्णु, आकाश को द्यूने हुये देदीप्यमान, अनेक रंगों वाले फैले हुए मुख और प्रकाशमान विशाल नेत्रों से युक्त आपको देखकर मैं भयभीत हो रहा हूँ तथा धीरज और शान्ति नहीं पा रहा हूँ. (११.२४)

आपके विकराल दाढ़ों वाले, प्रलय की अग्नि के समान प्रज्वलित मुखों को देखकर मुझे न तो दिशाओं का ज्ञान हो रहा है और न शान्ति ही मिल रही है. इसलिए हे देवेश, हे जगत के पालन कर्ता, आप प्रसन्न हों. (११.२५)

राजाओं के समुदाय — भीष्म, द्रोण, कर्ण और हमारे पक्ष के प्रधान योद्धागण — सहित धृतराष्ट्र के सभी पुत्र बड़ी तेजी से आपके विकराल दाढ़ों वाले भयानक मुखों में प्रवेश कर रहे हैं. उनमें से कुछ तो चूर्णित शिरों सहित आपके दांतों के बीच में फंसे हुए दीख रहे हैं. (११.२६-२७)

जैसे नदियों के बहुत सारे जल के प्रवाह स्वाभाविक रूप से समुद्र की ओर जाते हैं, वैसे ही संसार के शूरवीर भी आपके प्रज्वलित मुखों में प्रवेश कर रहे हैं. (११.२८)

जैसे पतंगे अपने नाश के लिए प्रज्वलित अग्नि में बड़े वेग से दौड़ते हुए प्रवेश करते हैं, वैसे ही ये सब लोग भी अपने नाश के लिए आपके मुखों में बड़े वेग से दौड़ते हुए प्रवेश कर रहे हैं. (११.२९)

आप सब लोकों को प्रज्वलित मुखों द्वारा ग्रास करते हुए सब ओर से चाट रहे हैं; और हे विष्णु, आपका उग्र प्रकाश अपने तेजसे सम्पूर्ण जगत को परिपूर्ण करके तपा रहा है. (११.३०)

(कृपया) मुझे यह बतायें कि उग्ररूप वाले आप कौन हैं? हे देवों में श्रेष्ठ, आपको मेरा नमस्कार, आप मुझसे प्रसन्न हों. हे आदि पुरुष, मैं आपको तत्त्व से जानना चाहता हूँ, क्योंकि मैं आपका प्रयोजन नहीं समझ पा रहा हूँ. (११.३१)

श्रीभगवान बोले— मैं सम्पूर्ण लोकों का नाश करने वाला महाकाल हूँ और इस समय इन सब लोगों का संहार करने के लिए

यहां आया हूं। तुम्हारे प्रतिपक्ष में जो योद्धा लोग खड़े हैं, वे सब तुम्हारे युद्ध किए बिना भी जिन्दा नहीं रहेंगे। (११.३२)

अतः तुम युद्ध के लिए तैयार हो जाओ और यश को प्राप्त करो; शत्रुओं को जीतकर सम्पन्न राज्य भोगो। ये सब योद्धा पहले से ही मेरे द्वारा मारे जा चुके हैं। हे अर्जुन, तुम केवल निमित्त ही बनो। (११.३३)

द्रोण, भीष्म, जयद्रथ, कर्ण तथा और भी बहुत सारे मेरे द्वारा मारे हुए वीर योद्धाओं को तुम मारो। भय मत करो, निस्सन्देह तुम युद्ध में शत्रुओं को जीतोगे। इसलिए युद्ध करो। (११.३४)

संजय बोले— भगवान् कृष्ण के इस वचन को सुनकर मुकुटधारी और अत्यन्त भयभीत अर्जुन ने हाथ जोड़कर कांपते हुए नमस्कार करके गद्गद वाणी से श्रीकृष्ण से कहा। (११.३५)

अर्जुन बोले— हे अन्तर्यामी भगवन्, यह सब उचित ही है कि आपके (नाम, गुण, लीला आदि का) कीर्तन से जगत हर्षित होकर अनुराग को प्राप्त हो रहा है। भयभीत राक्षस लोग सभी ओर भाग रहे हैं तथा सिद्धगण आपको नमस्कार कर रहे हैं। (११.३६)

हे महात्मा, वे आपको — जो ब्रह्माजी से भी बड़े और आदिकर्ता हैं — कैसे नमस्कार न करें? क्योंकि हे अनन्त, हे देवेश, हे जगत के पालनकर्ता; जो सत्, असत् और इन दोनों से परे परब्रह्म है, वह आप ही हैं। (९.१९, १३.१२ भी देखें) (११.३७)

आप ही आदिदेव और सनातन पुरुष हैं। आप ही जगत के आधार, सबको जानने वाले, जानने योग्य तथा परमधाम हैं। हे अनन्तरूप, यह सारा संसार आपसे ही व्याप्त है। (११.३८)

आप ही वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजापति ब्रह्मा और ब्रह्मा के पिता भी हैं। आपको हमारा सहस्र बार नमस्कार, नमस्कार और फिर बारम्बार नमस्कार है। (११.३९)

हे अनन्त सामर्थ्य वाले भगवन्, आपको आगेसे और पीछेसे भी नमस्कार। हे सर्वतमन्, आपको सब ओर से नमस्कार। आप अनन्त साहसी और शक्तिशाली हैं। सबमें व्याप्त रहने के कारण सब कुछ तथा सब जगह आप ही हैं। (११.४०)

हे भगवन्, आपकी महिमा को न जानने के कारण, आपको सखा मानकर, प्रेम से अथवा लापरवाही से मैंने "हे कृष्ण, हे यादव, हे सखे," आदि कहा है। (११.४१)

और हे अच्युत, आप मेरे द्वारा हंसी में, खेलने, सोने, बैठने और भोजन के समय — अकेले में अथवा दूसरों के सामने भी — जो अपमानित किए गए हैं, उन सब के लिए हे अपरिमित भगवन्, मैं आपसे क्षमा मांगता हूं। (११.४२)

आप इस चराचर जगत के पिता और सर्वश्रेष्ठ पूजनीय गुरु हैं। हे अतिशय प्रभाव वाले, तीनों लोकों में आपके जैसा दूसरा कोई भी नहीं है, फिर आपसे बड़ा कौन है? (११.४३)

इसलिए हे भगवन्, मैं आपके चरणों में साष्टांग प्रणाम करके आपको प्रसन्न करने के लिए प्रार्थना करता हूं। हे देव, जैसे पिता पुत्र के, मित्र अपने मित्र के और पति पत्नी के अपराध को क्षमा करता है, वैसे ही आप भी मेरे अपराधों को क्षमा कीजिए। (११.४४)

मैं आपके पहले कभी नहीं देखे जाने वाले इस रूप को देखकर हर्षित हो रहा हूं तथा भय से मेरा मन अत्यन्त व्याकुल भी हो रहा है। अतः हे देवेश, हे जगत के आश्रय, आप प्रसन्न हों और मुझे अपना (चतुर्भुज) देवरूप दिखायें। (११.४५)

मैं आपको मुकुट धारण किये हुए तथा गदा और चक्र हाथ में लिए हुए देखना चाहता हूं। इसलिए हे विराटरूप, हे सहस्रबाहो, आप अपने चतुर्भुजरूप में प्रकट हों। (११.४६)

श्रीभगवान् बोले— हे अर्जुन, तुम से प्रसन्न होकर मैंने — अपनी योगमाया के बलसे — अपना यह परम, तेजोमय, विराट्, अनन्त और मूलरूप तुम्हें दिखाया है, जिसे तुम से पहले किसी ने नहीं देखा है। (११.४७)

हे कुरुप्रवीर, तुम्हारे सिवा इस मनुष्यलोक में किसी और दूसरे के द्वारा — न वेदों के पढ़ने से, न यज्ञ से, न दान से, न उग्र तप से और न वैदिक क्रियाओं द्वारा ही — मैं इस रूप में देखा जा सका हूं। (११.४८)

मेरे इस विकराल रूप को देखकर तुम्हें व्याकुल और विमूढ़ नहीं होना चाहिए। निर्भय और प्रसन्नचित्त होकर अब तुम मेरे (शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए हुए) चतुर्भुजरूप को देखो। (११.४९)

संजय बोले— भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से ऐसा कहकर उसे अपना चतुर्भुजरूप दिखाया और फिर सुहावना मनुष्यरूप धारणकर महात्मा कृष्ण ने भयभीत अर्जुन को आश्वासन दिया। (११.५०)

अर्जुन बोले— हे जनार्दन, आपके इस सुन्दर मनुष्यरूप को देखकर अब मैं शान्तचित्त होकर अपनी स्वाभाविक स्थिति को प्राप्त हो गया हूं। (११.५१)

श्रीभगवान् बोले— मेरे जिस चतुर्भुजरूप को तुम ने देखा है, उसका दर्शन बड़ा ही दुर्लभ है। देवतागण भी सदा इस रूप के दर्शन की आकांक्षा करते रहते हैं। (११.५२)

उस चतुर्भुजरूप में — जैसा तुम ने देखा है — मैं न वेदों के पढ़ने से, न तप से, न दान से और न यज्ञ करने से ही देखा जा सकता हूं। (कठो.उ. २.२३ भी देखें) (११.५३)

परन्तु हे परन्तप अर्जुन, केवल अनन्य भक्ति के द्वारा ही मैं उस चतुर्भुजरूप में देखा, तत्त्व से जाना तथा प्राप्त भी किया जा सकता हूं। (११.५४)

हे अर्जुन, जो मनुष्य केवल मेरे ही लिए अपने सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मों को करता है, मुझे पर ही भरोसा रखता है, मेरा भक्त है तथा जो आसक्ति रहित और निर्वैर है, वही मुझे प्राप्त करता है। (८.२२ भी देखें) (११.५५)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विराटरूपदर्शनयोगो नाम एकादशोऽध्यायः ॥